इकाई 5 हड़प्पा सभ्यता-I*

इकाई की रूपरेखा

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 खोज

5.3 नामावली व विस्तार क्षेत्र

5.4 काल क्रम

5.5 उत्पत्ति के विषय में वाद-विवाद

5.6 प्रारम्भिक हड़प्पा क्या है?

5.6.1 प्रारंम्भिक हड़प्पा की संस्कृतियाँ

5.6.2 कुछ महत्वपूर्ण अवलोकन

5.7 सारांश

5.8 शब्दावली

5.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.10 संदर्भ ग्रंथ

5.0 उद्देश्य

इस इकाई में, हम हड़प्पा सभ्यता के रचनात्मक चरण को समझने जा रहे हैं। हम उन विभिन्न संस्कृतियों पर ध्यान केन्द्रित करेंगे, जिससे इस सभ्यता की नीवं पड़ी, साथ ही साथ हम उन कारकों के बारे में वाद-विवादों का भी अध्ययन करेंगे जिसके कारण परिपक्व हड़प्पा चरण का विकास हुआ। आप इस इकाई के पढ़ने के बाद निम्न विषयों को जानने में सक्षम होंगे :

- हड़प्पा सभ्यता की खोज;
- प्रारंभिक हड़प्पा संस्कृति की मुख्य विशेषताओं की पहचान;
- हड़प्पा सभ्यता के विस्तार व भौगोलिक प्रसार से जुड़ी जानकारी;
- हड़प्पा सभ्यता के उद्‌भव के विषय में विद्वानों के मत;
- विभिन्न क्षेत्रीय प्रारम्भिक हड़प्पा संस्कृतियों के विषय में ज्ञान; तथा
- प्रारम्भिक हड़प्पा से परिपक्व हड़प्पा तक का संक्रमण काल के विषय में जानकारी।

5.1 प्रस्तावना

इस इकाई में हम भारत के प्रथम शहरी सभ्यता का अध्ययन करेंगे, वह हैः सिंधु अथवा हड़प्पा सभ्यता। इसके पहली इकाइयों में आपने प्रथम कृषक संस्कृतियों के उदय का भारतीय उपमहाद्वीप – विशेषरूप से ब्लूचिस्तान व उत्तर प्रदेश क्षेत्र के संदर्भ में अध्ययन किया। इस प्रकार, मानव शिकारी-संग्रहकर्ता से खाद्य उत्पादक हो गया; जिसे नवपाषाण-

* डॉ. आवंतिका शर्मा, इन्द्रप्रस्थ महिला महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।

काल क्रांति के नाम से समझा जा सकता है। मानव विकास के अगले चरण में शहरों का विकास या नगरीकरण था। ये बस्तियाँ (आवास-स्थल) गाँवों से अलग थी और यह सत्ता के केन्द्र या द्वितीयक आर्थिक क्रियाकलापों से जुड़ी हुयी थी जैसे व्यापार, हस्तशिल्प, कला आदि। वे अधिक परिष्कृत सभ्यता व जीवन निर्वाहन के उदय को चिन्हित करते हैं।

5.2 खोज

सन् 1924 में जॉन मार्शल ने दुनिया को एक प्राचीन सभ्यता अर्थात् सिंधु घाटी सभ्यता के अस्तित्व के विषय में बताया। सिहांवलोकन से यह ज्ञात होता है कि वह प्रथम व्यक्ति नहीं थे जिनको इस सभ्यता से जुड़ी सामग्री मिली। चार्ल्स मेसन वह प्रथम व्यक्ति थे जिसने इसकी पहचान एक प्राचीन शहर, 'संगल' से की – जो सिकंदर के काल से जुड़ा था। 1853-1854 में एलेक्जेडर कनिंघम ने खंडहरों का दौरा किया और उन्होंने गलती से निष्कर्ष निकाला कि वह एक बौद्ध मठ था। उन्हें इस सभ्यता से जुड़ी मुहरें भी प्राप्त हुई, किंतु उसने इन मुहरों को विदेशी मूल का ही मान लिया क्योंकि इन मुहरों में बिना कूबड़ वाले बैल का चित्रण था, इसलिये वे भारतीय नहीं थी। अवशेषों के वास्तविक महत्व का पता चलने के लिए 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ की खुदाई की प्रतीक्षा करनी पड़ी। सन् 1920 में हड़प्पा की खुदाई दया राम साहनी व मोहनजोढ़ड़ो की राखलदास बनर्जी ने 1921 में की। दोनों स्थलों की प्राचीन कलाकृतियों की समानताएं सर जान मार्शल ने देखी, व उन्होंने 1924 में दुनिया को यह बताया कि उपमहाद्वीप में सबसे पुरानी सभ्यता की खोज हो गयी है।

5.3 नामावली व विस्तार क्षेत्र

इस खोज के आरम्भ के वर्षों में इसे सिंधु घाटी सभ्यता के रूप में जाना गया। ऐसा इसलिए था क्योंकि अधिकांश स्थल जैसे मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, अल्हादीनों, चन्हूदड़ों, सिंधु घाटी में ही खोजे गये। 1947 के बाद, भारतीय पुरातत्वविदों ने कुछ स्थल भारत में खोजें जैसे : लोथल, सुरकोटड़ा, धौलावीरा गुजरात में, कालीबंगन राजस्थान में, बनावली व राखीगढ़ी हरियाणा में। कुछ स्थल जैसे शौर्तुघई अफ़ग़ानिस्तान में खोजे गये। सबसे ज्यादा स्थलों लगभग 174, का संकेन्द्रण पाकिस्तान के चोलिस्तान क्षेत्र में खोजा गया। ये स्थल घग्घर-हकड़ा नदी के पुराने तले के पास स्थित थे। चूँकि अनेक नवीन स्थल सिंधु घाटी क्षेत्र के बाहर पाये गये है, इसलिए अब इसे सिंधु घाटी सभ्यता कहना उचित नहीं था। बहुत से विद्वान/शोधकर्ता इसे हड़प्पा की सभ्यता कहना पसंद करते हैं, क्योंकि सभ्यता को पहली बार खोजी गयी जगह के नाम पर नामकरण करना एक पुरातत्विक चलन है।

विस्तार क्षेत्र

सिंधु सभ्यता के स्थलों का विस्तार एक विस्तृत क्षेत्र में हुआ, जिसमें भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र और पाकिस्तान शामिल हैं। भौगोलिक दृष्टि से ये सिंधु क्षेत्र से अधिक विस्तृत थे। इनमें नदी तटीय निचले क्षेत्र, पूर्वी व दक्षिणी पूर्वी में उत्तर प्रदेश व राजस्थान से लेकर ब्लूचिस्तान के पहाड़ी व तटीय क्षेत्र व गुजरात के तटीय क्षेत्र सम्मलित हैं (मानचित्र 5.1)।

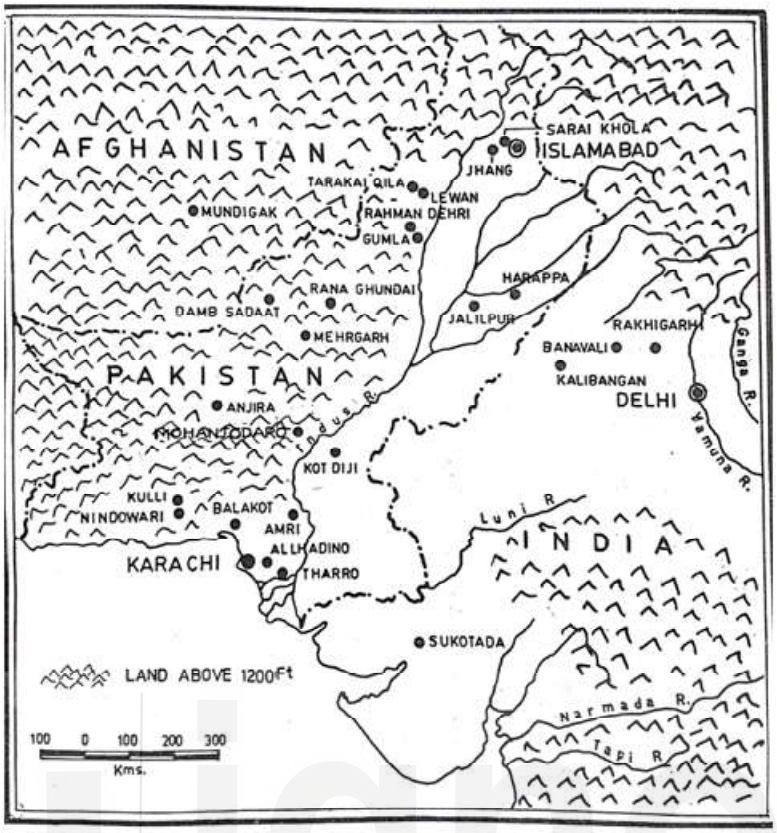

मानचित्र 5.1: प्रारम्भिक हड़प्पा के स्थल, ईएचआई-02, खंड 2।

सिंधु घाटी का निचला हिस्सा, एक समृद्ध क्षेत्र के रूप में प्रसिद्ध था और इसे सिंध दर्शाता है। यहाँ मोहनजोदड़ों लरकाना जिलें में स्थित है। ऊपरी सिंध में सुक्कुर पहाड़ियाँ स्थित हैं, जहाँ अनेक कामगारों की बस्तियाँ चकमक (chert) खादानों के क्षेत्र के आसपास मिली हैं। चकमक (Chert) हड़प्पावासियों के लिए एक महत्वपूर्ण सामग्री थी, जो की ब्लेड बनाने के काम आती थी। ब्लूचिस्तान का पश्चिमी क्षेत्र एक विविधतापूर्ण भूभाग था जिसका उस काल में इस्तेमाल किया जा रहा था। मकरान के तटीय क्षेत्र में सुतकागनदोर व सोतका-कोह जैसे स्थल स्थापित हुए, जो कि सिंधु सभ्यता, फारस की खाड़ी व मेसोपोटामिया के बीच समुद्री व्यापार में एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन करते थे। इन स्थलों से आंतरिक मार्ग भीतरी प्रदेशों में जाते थे। ब्लूचिस्तान की अन्य बस्तियाँ अत्यंत महत्वपूर्ण मार्गों पर और कृषि योग्य क्षेत्रों में स्थित थी। इन महत्वपूर्ण मार्गों के द्वारा ब्लूचिस्तान का तांबा, सीसा, अन्य अर्ध कीमती पत्थर (लाजवर्द, फिरोजा) को सिंधु घाटी की बस्तियों तक पहुंचाया जा सकता था।

सिंधु सभ्यता का सबसे उत्तरी स्थल शोर्तुघई है, जो कि उत्तरी पूर्वी अफ़ग़ानिस्तान में स्थित है। शोर्तुघई के माध्यम से बदकशां के लाजवर्द तथा मध्य-एशिया के टिन व स्वर्ण-खनिज तक पहुंचा जा सकता था। सिंध के उत्तरपूर्व में, पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में, सबसे प्रसिद्ध स्थल हड़प्पा है जो कि रावी नदी पर स्थित है। चोलिस्तान क्षेत्र का मरूस्थलीय भाग जिससे होकर नौकागम्य हकड़ा नदी प्रवाहित होती है, उसमें सिंधु बस्तियों का सर्वाधिक सकंन्द्रेण है। भौगोलिक दृष्टि से यह क्षेत्र सिंधु के मैदानी क्षेत्रों को राजस्थान से जोड़ता है, जहाँ तांबे के विशाल भण्डार पाये जाते हैं। पूर्व में सिंधु-गंगा विभाजक है, जो कि सिंधु व गंगा नदी प्रणालियों के बीच एक अंतवर्ती क्षेत्र है, यह पंजाब, दिल्ली, हरियाणा व राजस्थान के राज्यों और घग्घर नदी के जल मार्ग का गठन करता है। यह क्षेत्र राखीगढ़ी व बनावली और कालीबंगन जैसे स्थलों के लिए जाना जाता है (जो कि हड़प्पा जैसे बड़े स्थल है)। कुछ स्थल एकदम उत्तरी क्षेत्र सहानपुर के आसपास गंगा-यमुना दोआब में स्थित

हैं। अंत में कच्छ के रन व खम्भात की खाड़ी के क्षेत्रों में धौलावीरा का उदय हुआ। सौराष्ट्र के पूर्वी क्षेत्र में लोथल जैसा महत्वपूर्ण स्थल स्थित था। सभ्यता का दक्षिण की ओर सर्वाधिक विस्तार किम नदी के मुहाने पर स्थित भगतराव स्थल है।

5.4 काल क्रम

सभ्यता का काल रेडियो कार्बन डेंटिग की सहायता से 3300 बी.सी.ई. से 1300 बी.सी.ई. तक हो सकता है। हालाँकि अलग-अलग स्थलों का काल निर्धारण भिन्न-2 हो सकता है। यह पूर्ण घटना क्रम, विकास के स्तर के आधार पर तीन चरणों में बांटा जा सकता है। ये क्रम है – प्रारम्भिक हड़प्पा, परिपक्व हड़प्पा व उत्तर हड़प्पा। प्रारंभिक हड़प्पा व परिपक्व अवस्था के मध्य एक संक्रमणीय अवस्था को भी रखा जा सकता है। प्रत्येक चरण की विशेषता व उसके अनुमानित काल क्रम का सार निम्नवत है :

अवस्था	काल क्रम	महत्वपूर्ण स्थल	विशेषताएं
प्रारम्भिक हड़प्पा या क्षेत्रीयकरण	3300-2600 बी.सी.ई.	हड़प्पा, कोटदीजी, आम्री	किलेबंदी, ग्रिड़ योजना, व्यापार जालतंत्र का प्रारम्भिक विकास व शिल्प विशेष्टीकरण
संक्रमण का चरण	-	कुणाल, धौलावीरा, हड़प्पा	शिल्प विशेष्टीकरण के चरणों का विकास, संगठित सिचांई प्रणाली, मृदभांडों के डिजाइन व रूपों में आंशिक रूप से मानकीकृत स्वरूप।
परिपक्व हड़प्पा काल	2600-1800 बी.सी.ई.	मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, कालीबंगा, धौलावीरा	पूर्ण नगरीकरण का प्रारम्भ, कलाकृतियों में एकरूपता, पूर्ण विकसित व्यापार।
उत्तर हड़प्पा काल या स्थानियकरण	1800-1500 / 1300 बी.सी.ई.	हड़प्पा, सीसवाल, रोजदी, रंगपुर	कुछ स्थलों का समाप्त होना, पतन व चारागाही प्रणाली

5.5 उत्पत्ति के विषय में वाद-विवाद

खोज के शुरुआती वर्षों में, जब हड़प्पा की प्रारम्भिक-अवस्था की खोज नहीं हो पायी थी, तब इस विषय पर काफ़ी विवाद रहा कि, इस सभ्यता के उद्भव में देशी प्रभाव रहा या विदेशी प्रभाव से इसका उद्भव हुआ। विदेशी प्रभाव, विचारों के प्रसार अथवा लोगों के प्रवासन के रूप में देखे जा सकते हैं। विचारों या लोगों के प्रवासन के स्रोत के रूप में मेसोपोटामिया सभ्यता को सर्वाधिक अनुकूल उम्मीदवार के रूप से देखा गया।

1931 में जॉन मार्शल के इस सभ्यता के प्रारम्भिक उत्पत्ति के विचार सामने आये। उनके मोहनजोदड़ों पर दी गयी रिपोर्ट के अनुसार इस सभ्यता का उद्भव मूल रूप से देशी रहा, किंतु वे इसके समर्थन में कोई तथ्य नहीं दे सके। गार्डन चाइल्ड ने भी इसी विचार को अपनाया। उनका मत था कि हड़प्पा सभ्यता वर्षों तक के धैर्यपूर्ण प्रयासों का परिणाम है,

जिसकी विशेषता मनुष्य जीवन व पर्यावरण का उत्तम सामंजस्य था। इस सभ्यता ने प्रारंम्भिक भारत के साथ अनेक समानताएं साझा की, इसलिए उनके अनुसार यह 'विशिष्ट रूप से भारतीय थी'। 1920 के उत्तरार्ध में सिंध में अपने उत्खनन के दौरान एन.जी. मजूमदार ने 'आम्री' पर कार्य किया, जिससे मार्शल व चाइल्ड के सिद्धातों को मान्यता मिली। 'आम्री' में उन्होंनें हड़प्पा स्तर से नीचे विशिष्ट स्तरीकृत मृदभांड प्राप्त हुए। यह विशिष्टीकृत पुरात्तविक स्तर सिंध से प्राप्त कई स्थलों में समरूप थे। इस आधार पर उन्होंने तर्क दिया कि 'आम्री' मृदभांड़ों को हड़प्पा व मोहनजोदड़ों से संबंधित न मान कर ताम्रपाषाण संस्कृति के आरंभिक काल के रूप में देखा जाना चाहिए।

दूसरी ओर, अन्य विद्वान इस उपमहाद्वीप में शहरीकरण की शुरुआत के लिए मेसोपोटामिया की भूमिका में दृढ़ता से विश्वास करते हैं। इ. एच. मैके (1938) तर्क देते हैं कि यह सभ्यता मेसोपोटामिया की उरुक संस्कृति के आक्रमणकारियों तथा देशी लोगों के बीच परस्पर पारस्परिक प्रभाव से जन्मी थी। 1950 के दशक में विचारों का विभाजन इसी आधार पर किया गया था। स्टुअर्ट पिगॉट ने मार्शल के विचारों को समर्थन देते हुए तर्क दिया कि सभ्यता का उद्भव पूर्णतः देशी था, किंतु इसकी सही प्रक्रिया अभी तक समझी नहीं जा सकी है। एम. व्हीलर (1953) इस सम्भावना से इंकार करते हैं, उन्होंने मेसोपोटामिया के प्रभाव को महत्वपूर्ण माना, लेकिन उन्होंने प्रवासन को नहीं माना। उन्होंने यह कहा कि, मेसोपोटामिया प्रथम शहरी सभ्यता थी और यह एक प्रतिमान (model) के रूप में काम कर रही थी। एक परम्परा जिसे उधार लिया गया वह यहाँ भवन निर्माण में ईंटों का प्रयोग और मोहनजोदड़ो व हड़प्पा में निर्मित दुर्गों पर विदेशी प्रभाव दिखाई देता है। व्हीलर के अनुसार सिंधु सभ्यता ने मेसोपोटामिया से विचारों को ग्रहण किया। डी. एच. गार्डन ने तर्क दिया कि मेसोपोटामिया से लोगों का वास्तविक प्रवासन हुआ। उनके लिए एक मात्र मुद्दा प्रवासन का वास्तविक मार्ग निर्धारित करना था : भूमि या समुद्र। यही विचार हीन गेलर्डन व एस. एन. क्रेमर ने दिया था।

1960 के दशक में हमें धीरे-धीरे विद्वानों के विचार बदलते दिखे। पाकिस्तान के एफ. ए. खान ने 1955 व 1957 में सिंध में स्थित कोटदीजी की खुदाई की। इस स्थल पर हड़प्पा स्तर के नीचे एक किलेबंद दुर्ग परिसर मिला। विशिष्ट हड़प्पा की आकृतियों व रूपांकनों जैसे साधार तश्तरी, पीपल के पत्ते, मछली के शल्क व टेराकोटा केक ने यह महत्वपूर्ण संकेत दिया कि कोटदीजी के अवशेष सिंधु सभ्यता के पहले के हैं और बाद में सिंधु सभ्यता के विकास का पूर्वाभास देते हैं। जे. एम. कसल द्वारा 'आम्री' में 1959-62 में उत्खनन ने खान के विचारों को विश्वसनीयता दी। कालीबगंन में पुरातात्विक खुदाई 1960 में शुरू हुई, जो एक दशक तक लगातार चली, जिसमें अन्य महत्वपूर्ण खोजों का पता चला। यहाँ एक किलेबंद, योजनाबद्ध सिंधु सभ्यता से पूर्व की बस्ती विभिन्न मृदभांडों के साथ प्रकाश में आयी। उसी तरह, ए. घोष जो की घग्घर घाटी में कार्यरत थे, उन्हें सोथी नामक स्थल पर कालीबगंन के सिंधु पूर्व मृदभांडों के समकालीन मृदभांड मिले। उन्होंने आगे उल्लेख किया कि पूर्व सिंधु कालीन काली बगंन के मृदभांड़ों में कोटदीजी, हड़प्पा व कुछ ब्लूचिस्तान स्थलों के मृदभांडो में समान स्तरवाली समानताएं थी। इन सभी अवलोकनों में उन्होंने सिंधु सभ्यता के लिए 'सोथी' के आधार का दावा किया और उन्होंने 'सोथी' संस्कृति को प्रोटो हड़प्पा जैसा माना। एफ. आर. ऑलचिन व ब्रिजेट ऑलचिन ने भी यहीं तर्क दिया कि हड़प्पा सभ्यता का उद्भव, हड़प्पा पूर्व संस्कृति से हुआ जो कि सिंधु घाटी में इससे पूर्व स्थित थी। भारतीय पुरात्विक साहित्य में (1960 के दशक में) कोटदीजी, कालीबगंन व हड़प्पा के अन्य स्थलों की खोजों का वर्णन करने हेतु बार-बार पूर्व-हड़प्पा शब्द का प्रयोग हुआ।

1970-71 में, एक अप्रकाशित शोध कार्य में एम.आर. मुगल ने, 'पूर्व हड़प्पा' शब्द का प्रयोग निम्नलिखित विशेषताओं को दर्शाने के लिए कियाः स्थायी निवास, सुसंपन्न वास्तुकला, प्रशासनिक केंद्र की उत्पत्ति जो की दुर्ग की दीवारों से पता चलता है, तांबे, शैलखटी (steatite) और लाजवर्द का सार्वजनिक ज्ञान और प्रयोग, हड़डियों व पत्थरों के औजारों में समरूपता, विशिष्ट शिल्प जो व्यवसायिक व वर्गीय स्तरीकरण की संभावना को दर्शाते हैं, और अंत में पहिये वाली गड़ियों का प्रयोग, और समरूप मृदभांडों का बलुचिस्तान समेत एक विस्तृत क्षेत्र में विस्तार। उन्होंने इस अवस्था को ''प्रारंभिक शहरीकरण'' की अवस्था बताया, जो कि बाद में सघन समरूप, मानकीकृत व परिपक्व अवस्था की तरफ़ अग्रसर होती है। दो मुख्य कारक जो इस विकास के मुख्य कारण रहे, वह थेः मेसोपोटामिया के साथ व्यापार का बढ़ना और जनसंख्या वृद्धि। वास्तुकला, शिल्प विकास के स्तर, प्रौद्योगिकी और व्यापार तंत्र पर ध्यान केन्द्रित हुआ और वे मृदभांडों के अध्ययन से आगे निकल गये। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि अंतर के बावजूद, समकालीन संस्कृतियों में वास्तुकला, कलाकृतियों और तकनीकी की समानतायें थी।

1970 के दशकों से परिपक्व हड़प्पा काल से पहले आरंभिक हड़प्पा काल की मौजूदगी तेजी से स्वीकार्य हो गयी। लेकिन पुरातत्वविद् अभी भी उन वास्तविक कारकों को इंगित नहीं कर पाये हैं जो परिपक्व हड़प्पा चरण में संक्रमण के कारण बने। घोष (1965) का मानना था कि प्रतिभावान तानाशाह जो सुमेर के निवासियों के साथ प्रतिस्पर्धा करना चाहते थे, संक्रमण के पीछे थे। इस सिद्धांत के साथ समस्या, जैसा कि डी.के. चक्रबर्ती का मानना है, वह यह है कि तानाशाह आमतौर पर अधिक जटिल वर्ग-आधारित समाजों में पाये जाते हैं। प्रारंभिक हड़प्पा का स्तर इस जटिलता के स्तर पर नहीं था। साथ ही, किसी भी व्यक्ति के लिए यह बदलाव थोपना मुश्किल है अगर समाज ही इसके लिए तैयार नहीं है।

अपितु, डे. के चक्रबर्ती ने परिपक्व हड़प्पा चरण से प्रारंभिक हड़प्पा चरण को अलग करने वाले दो नये घटनाक्रमों पर बल दिया।

i) शिल्प कुशलता में विकास, जो कि वस्तु के उत्पादन की मात्रा बढ़ने में दिखाई देता है और जो तांबे धातु उद्योग के अधिक्य के साथ गहनता से जुड़ा होना चाहिए।

ii) संगठित सिंचाई व्यवस्था का विकास।

इन दो घटनाक्रमों ने एक अधिक जटिल समाज के निर्माण के लिए पूर्व शर्त बनाई होगी। एक जटिल समाज परिपक्व हड़प्पा की विशेषता है। इर्फान हबीब (2002), ने परिपक्व चरण में उल्लेखनीय एकरूपता पर गौर किया है। इसका अर्थ था युद्ध द्वारा राजनीतिक एकीकरण की प्रक्रिया सम्पन्न हुई। दरअसल 3/5 प्रारंभिक हड़प्पा स्थलों को पुनः बसावट से पहले त्याग दिया गया था। कुछ स्थल जैसे आम्री, कोटदीजी, नौशारों व गुमला आग में नष्ट हो गये। यहाँ यह पता लगाना कठिन है कि इन चार संस्कृतियों में से किसने आक्रमण का प्रयत्न किया। चूंकि हड़प्पा में लगातार बसावट बनी रही, और वहां कोई विनाश नहीं हुआ, इसलिए हबीब ने यह निष्कर्ष निकाला कि हड़प्पा की भिन्न-भिन्न प्रारम्भिक संस्कृतियों में एकता स्थापित करने के प्रयास में कोटदीजी संस्कृति ने अहम् भूमिका निभाई होगी। इस तर्क की एकमात्र कमजोरी यह है कि इन स्थलों पर हथियारों की संख्या कम ही पायी गयी है। यह तर्क युद्ध का समर्थन नहीं करता। कुछ विद्वानों का मत है कि इन स्थलों में आग लगने से विनाश एक प्रकार का अनुष्ठानिक शुद्धिकरण (यज्ञ) के कारण हुआ था। इस कारण से आम वैचारिकी (ideology) पर आधारित बस्तियों का पुनः निर्माण हुआ, जिसमें सड़क उन्नमुखीकरण, जल आपूर्ति व सामग्री की एकरूपता पर दिशा निर्देश दिये गये। उस प्रकार, एक आम वैचारिकी ने परिपक्व हड़प्पा की ओर सक्रंमण को बढ़ावा दिया।

बोध प्रश्न 1

1) निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही (✓) है, और कौन-सा गलत (×)?

   क) चार्ल्स मैसन पहले व्यक्ति थे जिसने हड़प्पा को एक प्राचीन शहर के रूप में पहचाना, जिसे एलेक्ज़ेंडर के समय का 'संगल' कहा जाता था। ( )

   ख) हड़प्पा सभ्यता के लोग लोहे के इस्तेमाल से परिचित थे। ( )

   ग) इस सभ्यता को हड़प्पा सभ्यता कहा जाता है, क्योंकि हड़प्पा प्रथम स्थल था जिसकी खोज हुई। ( )

   घ) हमारे पास इसका प्रमाण है कि हड़प्पा के पूर्वज बड़े शहरों में रहते थे। ( )

2) हड़प्पा सभ्यता की भौगोलिक विशेषताओं पर दस पंक्तियाँ लिखें।

.....

.....

.....

.....

.....

5.6 प्रारम्भिक हड़प्पा क्या है?

परिपक्व हड़प्पा काल का उद्भव एक अचानक हुआ विकास नहीं था। इसकी जड़ें उस क्षेत्र से जुड़ी हैं, जहाँ अनेक नवपाषाण-ताम्रपाषाण संस्कृतियों ने खाद्य उत्पादन को अपनाया। पिछली इकाइयों में आपने, ब्लूचिस्तान में स्थित मेहरगढ़, खैबर-परख्तूनख्वा में स्थित गुमला और रेहमान ढेरी, चोलिस्तान के हाकड़ा संस्कृति व पंजाब और हरियाणा जैसे स्थलों व संस्कृतियों के विषय में विस्तृत रूप से अध्ययन किया। लगभग 3300 बी.सी.ई. से इन स्थलों पर नवीन विकास की शुरुआत दिखाई देने लगती है, जो परिपक्व हड़प्पाकाल के पूर्वगामी थे। वास्तुशिल्प के अनुसार, दुर्गों का उद्भव हुआ, बस्तियों का दो भागों में विभाजन, ग्रिड नियोजन के प्रमाण के साथ, ईंटों का 1:2:4 में हड़प्पा अनुपात, मोती, सीपियों की चूड़ियों, पत्थर के औजार और यहाँ तक कि तांबा धातु कर्म भी दिखाई पड़ता है। इसके अतिरिक्त हम एक व्यापार तंत्र के विकास को भी देखते हैं। कुछ स्थलों पर हमें संचार के लिए लेखन का प्रयोग भी दिखाई देता है और यह लिपि परिपक्व हड़प्पा की लिपि के प्रतीकों से मिलती है। कृषि में फसलों की पद्धति परिपक्व चरण के समान है।

जहां एक ओर अनेक स्थलों में यही विकास दिखाई देता है, दूसरी ओर हम मृदभांडों में व उसकी परतों में भिन्नतायें देखते हैं। ये अंतर रूपाकंनों में भी थे, हालांकि कुछ साझा रूपाकंन परिपक्व अवस्था में भी जारी रहे। इस चरण में, हमें शिल्प का मानकीकरण नहीं दिखाई देता, जो परिपक्व चरण का एक महत्वपूर्ण लक्षण है। इसलिए जिम शैफर (1992) ने प्रारंभिक हड़प्पा के चरण को क्षेत्रीयकरण का युग भी कहा है। मृदभांडों में अंतर ने पुरातत्वविदों को चार प्रारंभिक हड़प्पा संस्कृतियों में वर्गीकृत करने के लिए प्रेरित किया : कोटदीजो, सोथी-सीसवाल, आम्री-नल व डम्बसदात (पोशैल-2002)।

5.6.1 प्रारंभिक हड़प्पा की संस्कृतियाँ

लगभग 3200 बी.सी.ई. में एक परिवर्तन हुआ जो कि चार संस्कृतियों के उभरने में देखा जा सकता है। ये पूरे सिंध क्षेत्र व ब्लूचिस्तान के कुछ क्षेत्रों में स्थित थे। ये अपने विशिष्ट

मृदभांड़ों द्वारा पहचाने जाते हैं जिसका नामकरण उनके स्थलों के आधार पर हुआ।

1) कोटदीजी संस्कृति NWFP, पाकिस्तान, पंजाब व उत्तरी सिंध के बड़े भाग में फैली हुई थी।

2) सोधी-सीसवाल संस्कृति की बस्तियां उत्तरी राजस्थान, भारतीय पंजाव व हरियाणा तक थी।

3) आम्री-नल संस्कृति, ब्लूचिस्तान, मध्य व दक्षिणी सिंध, जिसका विस्तार गुजरात तक था, में पायी गयी है।

4) दम्बसदात चरण मध्य ब्लूचिस्तान में स्थित था।

1) कोटदीजी

कोटदीजी संस्कृति प्रारंभिक हड़प्पा की संस्कृतियों में सबसे महत्वपूर्ण है। यह सर्वप्रथम सिंध के कोटदीजी क्षेत्र में 1955 में एफ. ए. खान द्वारा पहचानी गयी। इस स्थल पर प्रारंभिक व परिपक्व हड़प्पा, दोनों ही चरण पाये गये हैं। प्रारंभिक हड़प्पा चरण 3300 बी.सी.ई. का है। इस चरण में किलेबंदी थी, बस्ती ऊपरी दुर्ग व निचले नगर में विभाजित थी। किलेबंदी का निर्माण मिट्टी की ईटों, पत्थरों के द्वारा हुआ था और इन्हें बुर्जों के साथ तैयार किया गया था। बस्ती के अंदर से लघुपाषाणिक-उपकरण व वस्तुएं जैसे मनका, पकी मिट्टी (Terracotta) के खिलौने, पशु मूर्तियां, चूड़ियाँ व मृदभांड जैसी वस्तुएं प्राप्त की गयी हैं। ये मृदभांड अच्छी तरह आग में पके लाल व बादामी रंग के हैं और साथ ही इनमें सामान्य रूपांकन जैसे सींग वाले देवता, पीपल की पत्तियां, मछली शल्क जैसे चित्र काले रंग में बने होते थे (चित्र 5.1)।

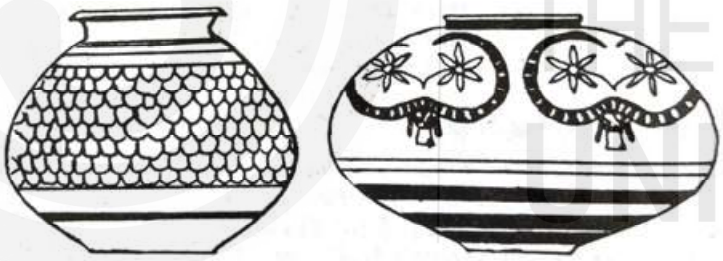

चित्र 5.1: बायें – प्रारम्भिक सिंधु मृदभाड़ : कोटदीजी; दायें – प्रारम्भिक सिंधु मृदभाड, - कालीबंगन, स्रोत : ई एच आई-02, खंड-2.

कोटदीजी संस्कृति बाद में अन्य स्थलों पर भी खोजी गयी। स्थलों का संकेन्द्रण चोलिस्तान में था जबकि कुछ स्थलों की खोज पंजाब में भी हुयी। ब्लूचिस्तान में कुछ स्थल जैसे – मेहरगढ़, नौशारों, कोटदीजी संस्कृति से प्रभावित दिखाई पड़ते हैं। किंतु उनकी भौतिक संस्कृति पर ज्यादा प्रभाव दम्बसदात का है। पोशैल के अनुसार इसकी लगभग 111 स्थलों की पहचान हो चुकी है जिसका औसत क्षेत्रफल 6.31 हेक्टेयर था।

चोलिस्तन

कोटदीजी संस्कृति यहाँ हाकड़ा अवस्था के बाद में आई। अधिकांश स्थल घग्घर-हाकड़ा नदी के सूखे तल पर स्थित है। 40 स्थलों की जानकारी प्राप्त हुयी जिनका क्षेत्रफल लगभग 0.1 हेक्ट. से 30 हेक्ट. तक था। इनमें जलवली (22.5 हेक्ट.) व गमनवाला (27.3 हेक्ट.) सबसे बड़े स्थल हैं। दुर्भाग्यवश अभी तक किसी भी क्षेत्र की खुदाई नहीं हो पायी है।

हालांकि कुछ महत्वपूर्ण घटना क्रम को देखा जा सकता है। प्रथमतः स्थायी बसावट की ओर प्रवृति। इस अवस्था में हाकड़ा अवस्था की तुलना में शिविर स्थलों की बहुत कम उपस्थिति दिखाई देती है। दूसरा हम देखते हैं, शिल्प विशेषीकरण में बढ़ोतरी हो रही थी, जैसा 14 स्थलों पर मृदभाड़ों के पकाने हेतु भट्ठों के मिलने से इसका प्रमाण मिलता है।

कोटदीजी संस्कृति के अन्य महत्वपूर्ण स्थल :

1) तरकई किला, लेवान, इस्लाम चौकी व लेक लरगई खैबर पक्खतूनख्वा की बन्नू घाटी में।

2) गोमल घाटी में झंडी बाबर, मारू I, मारू II, घाड़े उमर खान, रहमान ढेरी व गुमला।

3) रहमान ढेरी, एक महत्वपूर्ण स्थल है, जहाँ से दो महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती हैं, प्रथम, हाथी दाँत से बनी मुहरें व मृदभाड़ों पर बने भित्ति चित्र व द्वितीय, ये संचार व्यवस्था के शुरुआती व संभवतः राजनीतिक नियंत्रण को दर्शाते हैं।

4) पोटवार पठार में स्थित सराइ खोला। यहां चरण II कोटदीजी का है। इस चरण में चाक के बने बर्तनों की शुरुआत हुयी। अन्य सामग्री जो खोजी गयी, वह तांबा, पकी मिट्टी व शंख से बनी चूड़ियाँ, पत्थर के औजार, पकी मिट्टी से बनी पशु लघुमूर्तियां, खिलौने, बैल गाड़ियाँ व पत्थर के मनके हैं।

पंजाब

जलीलपुर व हड़प्पा में प्रारम्भिक हड़प्पा संस्कृति के लक्षण दिखाई देते हैं। यहाँ हम केवल हड़प्पा के स्थल पर चर्चा करेंगे। कोटदीजी संस्कृति का जन्म 2800-2600 बी.सी.ई. नवपाषाण रावी-हाकड़ा चरण के बाद में हुआ था। स्थल लगभग 20 हेक्ट. है और मिट्टी की इंटों की दीवार से घिरा हुआ है। बस्तियां दो भागों में विभाजित हैं, जिनमें उत्तर-दक्षिण, पूर्व-पश्चिम की तरफ़ सड़कें उन्मुख थी। घरों के निर्माण में ईटों का अनुपात 1:2:4 होता था। शिल्प में यह स्थल मनकों का एक महत्वपूर्ण उत्पादन केन्द्र है, जैसा कि पत्थर की बेधनी व कच्चे माल के फलकें सिद्ध करती है। लोकप्रिय सामग्री जिसमें इंद्रगोप, सूर्यकांत, लाजवर्द, अमेज़नी पत्थर व गोमेद के मनके शामिल हैं विनिमय की ओर संकेत करते हैं। अन्य वस्तुओं की खोज में पत्थर, हड्डी के उपकरण शामिल हैं। इसके साथ तकले की चकी व आभूषण जैसे हार व चूड़ियाँ जो शंख व पकी मिट्टी के बने होते थे मिले हैं। मिट्टी के बर्तनों पर डिजाइन भी शामिल थे जैसे मछली के शल्क, पीपल की पत्तियां जो कि परिपक्व चरण में भी पायी जाती थी। सबसे महत्वपूर्ण खोज मिट्टी के बर्तन व वर्गाकार मुहरों पर अंकित सिंधु लिपि का प्रारम्भिक रूप था। इसके अतिरिक्त हमने एक वर्गाकार, चूना पत्थर के बाट (Weight) की खोज की है।

2) सोथी-सीसवाल संस्कृति

राजस्थान में सोथी व हरियाणा में सीसवाल का उत्खन्न क्रमशः 1955 व 1970 में हुआ। दोनों स्थलों पर एक समान मृदभांड़ों की प्राप्ति हुई। 1960 के दशक में ए. घोष (1964) ने इनकी समानता कोटदीजी मृदभांडो के साथ बताई। यहाँ के मृदभाड़ों के रूपांकनों में समानता है किंतु कुछ प्रमुख भिन्नता आकार व ऊपरी सतह से जुड़ी विशेषताओं में पायी गयी है, जिसके फलस्वरूप, सोथी-सीसवाल संस्कृति को कोटदीजी की उपसंस्कृति के रूप में पहचाना गया है। पोशैल के अनुसार इस संस्कृति से जुड़े 165 स्थलों को पहचाना गया है। ये स्थल मुख्य रूप से राजस्थान व हरियाणा क्षेत्र में स्थित हैं। बिना खुदाई वाले कुछ स्थल जैसे रोहिरा व महोराना भारत के पंजाब क्षेत्र में स्थित हैं।

राजस्थान में कालीबंगन सबसे महत्वपूर्ण स्थल है (चित्र 5.2)। इस स्थल से बस्ती के दो चरणों के प्रमाण मिले हैं। प्रथम चरण सोथी-सीसवाल चरण है। इस चरण में, स्थल किलेबंद दीवारों से घिरा हुआ था। दीवार के भीतर मिट्टी से बनी ईटों से बने घर जो एक केन्द्रीय आंगन से युक्त थे, खोजे गये हैं। यहाँ पर तंदूर व चूना प्लास्टर वाले भंडारगर्त को प्राप्त किया गया है। अन्य प्राचीन वस्तुओं में तांबें की वस्तुए, लघुपाषाण औजार, मिट्टी और शंख की चूड़ियाँ, व अर्द्धमूल्यवान पत्थर और सोने के मनके शामिल हैं। कुछ मिट्टी के टुकड़ों पर सिंधु लिपि से मिलते जुलते प्रतीक मिले हैं। दक्षिण के तरफ़ हल रेखा के चिन्ह वाले खेत के मैदान भी खोजें गये। यह पूरा चरण लगभग 2900/2800 बी.सी.ई. काल का है।

हरियाणा

हरियाणा क्षेत्र सोथी-सीसवाल संस्कृति से समृद्ध है। सीसवाल के अलावा, ये चरण कुनाल, बालू, बनावली, राखीगढ़ी व भीराना में पाया गया है। लगभग इन सभी स्थलों से मिट्टी के ईटों से बनी संरचनाओं के प्रमाण मिले हैं। कुनाल में ईंटों का अनुपात 1:2:3 तथा 1:2:4 का है तथा भीराना में अनुपात 1:2:3 का है। कुनाल में प्रारम्भिक हड़प्पा स्थल का क्षेत्रफल लगभग एक हेक्ट. था। यहाँ हमारे पास दो प्रारम्भिक हड़प्पा संस्कृतियाँ IB व IC हैं। IB का वर्गीकरण इसमें मिले सोथी बर्तनों के आधार पर प्रारम्भिक हड़प्पा काल में किया गया है। किंतु इस अवधि में कोई भी ईटों से बनी संरचना नहीं थी। ईटों के बजाय यहाँ के लोग नरकुल और मिट्टी (wattle and Daub) से बने संरचनाओं में रहते थे। अगले चरण IC में ईटों के मकान दिखाई देते हैं, जिनमें ईटों का अनुपात 1:2:4 या 1:2:3 होता था। घर से कूड़े के डिब्बे व जार भी प्राप्त हुये हैं। इस चरण का एक महत्वपूर्ण खोज, सोने व चांदी के आभूषणों का संग्रह जो लाल रंग के बर्तन में मिला है। साथ ही लाजवर्द के छोटे मनकों, 92 गोमेद के मनके व प्रकाचित मिट्टी से बनी व कार्नेलियन मोतियों के बड़े भंड़ार/संग्रह

चित्र 5.2: प्रारम्भिक सिंधु कालीन मृदभाड़ : कालीबंगन। स्रोतः ईएचआई-02, खंड-2

प्राप्त हुये थे। धातु कर्म के भी कुछ प्रमाण मौजूद हैं क्योंकि हमने पिघली हुई धातु के साथ पकी मिट्टी की कुल्हिया (crucible) की खोज की है। अन्य महत्वपूर्ण खोजें मछली के काटें, तीर व नोकदार भाले, समतल कुल्हाड़ियाँ हैं। राखीगढ़ी से योजनाबद्ध बस्तियों व मिट्टी की ईंटों की सरंचना से जुड़े आंकड़ें प्राप्त हुये हैं। अन्य महत्वपूर्ण कलाकृतियों में बिना खुदे मुहरैं, भित्ति चित्रों के साथ मृदभांड़ों, पकी मिट्टी के पहियें, गाड़ियां और बैल, झुनझुनें, चकमक के ब्लेड, बाट, व एक मूसल शामिल हैं। इस स्थल से प्रचुर मात्रा में मवेशियों की हड्डियाँ पायी गयी हैं जो कि पशुपालन के महत्व को दर्शाती हैं।

3) आम्री-नाल संस्कृति

एक और संस्कृति जिसकी पहचान प्रारम्भिक हड़प्पा की संस्कृति के रूप में हुई है वह है आम्री-नल संस्कृति। इस संस्कृति वाले स्थल पर दो प्रकार के मिश्रित मृदभांडों की प्राप्ति हुई है – एक की खोज 'आम्री' में व दूसरे की खोज 'नल' में हुई। ये स्थल सिंध व ब्लूचिस्तान दोनों में स्थित हैं। ब्लूचिस्तान के स्थलों पर 'नल' मृदभांडों की अधिकता है, व सिंध के स्थलों से हमें आम्री मृदभांड अधिक मात्रा में प्राप्त होते हैं। आम्री के मिट्टी के बर्तनों को हल्के लाल अथवा बादामी रंग के होने तक पकाया जाता था या साथ-साथ लाल अथवा बादामी रंग पर काले रंग के घुमावदार डिजाइन के साथ चित्रित किया जाता था। रूपाकंनों के रूप में मृदभाडों में ज्यामितिये व वक्रीय लाइनों का प्रयोग होता था जिनमें लाल रंग होते थे। वहीं दूसरी तरफ़ नल मृदभांडों को बादामी व हल्के गुलाबी रंगों तक पकाया जाता था, और हल्का बादामी व लाल रंग उपर से लगाया जाता था। इन मृदभांडों पर अलग-अलग रंगों से डिजाइन बने होते थे, ये उपमहाद्वीप में खोजे गए सबसे सुंदर मृदभांड़ों में से एक हैं। इस संस्कृति के लोग अनिवार्य रूप से चारागाही होने के कारण गर्मियों में पहाड़ों की तरफ़ प्रवासन करते थे व सर्दियों में सिंधु घाटी में (पोशैल-2002). इस संस्कृति के लगभग 164 स्थलों को पहचाना गया है, जिसमें छोटे शिविरों के रूप में 3.67 हेक्ट. के स्थल औसत हैं। कुछ बस्तियों में किले बंदी भी थी।

गुजरात : एक विशेष मामला

जैसा कि ज्ञात हुआ है, गुजरात के कुछ स्थलों पर आम्री-नल और कोटदीजी दोनों शैली के मृदभांड़ों की खोज से इसे विशेष दर्जा प्राप्त है। हड़प्पा के प्रारम्भिक चरण की खुदाई पादरी, कुन्टासी, व धौलावीरा नामक स्थानों पर हुई है। धौलावीरा में दो समयावधि प्रथम I व द्वितीय II प्रारम्भिक हड़प्पा काल की है (बिष्ट, 2000)। सभ्यता के ठीक प्रारम्भ से ही उन स्थलों की किलेबंदी, रोड़ी-पत्थरों व मिट्टी के गारों से की गई थी। किलेबंदी के अंदर के ढांचे में प्रयुक्त हुई ईटों का अनुपात 4:2:1 है। तांबा धातु कर्म, पाषाण उद्योग, सीप-कार्य और मृदभांड़ों के कार्य को हम आर्थिक परिदृश्य में रख कर देख सकते हैं। यहाँ मृदाभांड़ों की खोज हुयी है। वे आम्री-नल व कोटदीजी दोनों स्थलों से सम्बंध दर्शाते हैं। द्वितीय (II) समयावधि में हम इन स्थलों का विस्तार देखते हैं जिसमें भवनों के साथ किलेबंदी के लिए 2.8 मीटर मोटी मिट्टी के ईंटों की दीवार पायी गयी है। पादरी में प्रारम्भिक हड़प्पा का समय 3300-2600 बी.सी.ई. का है, जिसका क्षेत्रफल 3 हेक्टेयर था। वहाँ के निवासी मिट्टी से बनी ईटों के घरों में रहते थे और ताँबा धातु कर्म से परिचित थे। हमनें वहाँ मृदभांड़ों के भट्टों व मनकों के उत्पादन से सम्बन्धित साक्ष्य भी प्राप्त किये हैं। यहाँ प्राप्त मृदभांड़ भी प्रारंभिक हड़प्पा स्थलों से प्राप्त बर्तनों से बहुत भिन्न हैं। यह हाथों द्वारा निर्मित उत्पाद हैं, जिस पर गाढ़े लाल रंग की चौड़ी परत लगी हुई है। उस काल के ऊपरी स्तर में पाए गये बर्तनों के टुकड़ों पर सिंधु घाटी का आलेख भी पाया गया है।

4) दम्बसदात

मृदभांड़ों के आधार पर दम्बसदात को भी हम प्रारम्भिक हड़प्पा की उप-संस्कृति कह सकते हैं। इस संस्कृति के मृदभांड़ भी कोटदीजी से प्रभावित है, परंतु इस पर अंकित विभिन्न पौधे, जानवर एवं ज्यामितीय रूपाकंन इसे सबसे अलग बनाते हैं। पोशैल (2002) ने इसे प्रारम्भिक हड़प्पा काल का स्थानीय रूप कहा है। इस संस्कृति की लगभग 37 स्थलों की जानकारी मिली है, जिनका औसत आकार 2.26 हेक्टे. है। सबसे बड़ा स्थल क्वेटा मीरी (लगभग 23 हेक्ट.) और दूसरे स्थान पर मुंड़ीगक (18.75 हेक्ट.) है। अन्य महत्वपूर्ण स्थल दम्बसदात व फैज मोहम्मद हैं। इसके अतिरिक्त यह भी प्रतीत होता है कि मेहरगढ़ व नौशारों की संस्कृति भी इस उप-संस्कृति से प्रभावित थी।

5.6.2 कुछ महत्वपूर्ण अवलोकन

मृदभांड़ों की विभिन्न परम्पराओं के बावजूद, इन क्षेत्रीय संस्कृतियों में बहुत सी समानताएं पायी गयी हैं। पहला प्रमुख विकास कृषि क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति से परिलक्षित होता है। बैल को एक भारवाही पशु में बदल दिया गया। हड़प्पा के पूर्व सिंधु स्तरों में गाड़ी के पहियों की लकीरों के प्रमाण मिले हैं, जिनका अध्ययन कोटदीजी काल के जलीलपुर (पश्चिमी पंजाब) में पाए पकी मिट्टी के पहियों की गाड़ी, उसके ढाचें व मिट्टी के बैल के संदर्भ में किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त कालीबगंन में पुरातत्वताओं ने एक सीधी हल रेखा के निशान वाला एक मैदान खोजा है, जो परिपक्व हड़प्पा मलबे के नीचे मिला है। अतः पुरातत्वविदों ने इसे प्रारम्भिक सिंधु काल माना है।

कृषि क्षेत्र में विकास के कारण प्रति व्यक्ति उपज में बढोतरी हुयी थी। प्रारम्भिक सिंधु काल में गेहूं व जौ की खेती के भी साक्ष्य मिले हैं। उदाहरण के लिए, रेहमान ढेरी व कालीबंगन में रबी की फसलें उगाई जाती थीं। सोथी-सीसवाल के एक स्थल-रोहिरा में ज्वार, जो कि एक खरीफ अथवा गर्मियों में उगायी जाने वाली फसल है, उगाई जाती थी। सिंधु घाटी के प्रारंभिक चरण में कालीबंगन में तन्दूर भी पाए गये हैं। इससे इस बात की पुष्टि होती है कि भारत में रोटी बनाने का इतिहास 5000 साल पुराना है।

सभी प्रारंभिक हड़प्पा स्तरों में चाक से बनाये मृदभांड़ों का प्रभुत्व है। कोटदीजी के उत्कृष्ट ब्लेड उत्तर सिंध में स्थित सुक्कुर-रोहड़ी पहाड़ियों से प्राप्त चकमक पत्थर से बनाये जाते थे। नल (ब्लूचिस्तान) में एक कार्यशाला के अवशेषों से पता चलता है कि तांबे के प्रगलन में काफ़ी प्रगति हुई थी। नल और कालीबंगन दोनों स्थलों से शैलखटी (steatite) और शंख के मनके मिले हैं जो यहाँ लम्बी दूरी के व्यापार के द्वारा पहुँचे होंगे।

पहले की हाकड़ा चरण की बस्तियों की तुलना में प्रारम्भिक सिधुं की बस्तियाँ आकार व संख्या में बड़ी व अधिक स्थायी प्रकृति की थी। हालांकि पकायी हुई ईटों का प्रयोग बहुत कम था किंतु मिट्टी की ईटों से बनी संरचना प्रचुर मात्रा में है। हड़प्पा के कोटदीजी के स्तरों में अनुमानित क्षेत्रफल 40 हेक्ट. है। हरियाणा के सोथी सीसवाल स्थल के राखीगढ़ी के संदर्भ में भी यही स्थिति है। पोशैल का 291 प्रारम्भिक सिंधु स्थलों के आधार पर यह अनुमान है कि इनका औसत क्षेत्रफल 4.5 हेक्ट. था, जिसमें 34 बस्तियों का क्षेत्रफल 10 हेक्ट. से ज्यादा था। हालाँकि अधिकतर स्थलों में नगरीकरण की क्रांति नहीं पहुँची थी, फिर भी कुछ बस्तियों ने छोटे शहरों का दर्जा प्राप्त कर लिया था। प्रारम्भिक सिंधु घाटी के कुनाल और नौशारों में कुछ मुहरें प्राप्त हुई हैं, लेकिन उनकी प्राप्ति सीमित ही है। इसी प्रकार महलों व स्मारकीय भवनों की संख्या भी कम ही ज्ञात है। कोटदीजी, कालीबंगन, कोहत्रास बूथी (पश्चिमी सिंध) और रेहमान ढेरी में शासकों द्वारा निर्मित रक्षात्मक दीवार

पायी गयी है। हालाँकि ऐसी प्रतीत होता है कि बड़े - शक्तिशाली राज्यों की तुलना में छोटी रियासतें ज्यादा रही होंगी। कई स्थलों पर अंत्येष्टि संस्कारों का अभ्यास किया जाता था। ब्लूचिस्तान के नल व दम्बबूथी तथा गुजरात (आम्री-नल संस्कृति) के सुरकोटडा और नागवाड़ा जैसे स्थलों पर हमें आशिंक रूप से दफनाने की प्रथा का भी पता चला है। कोटदीजी के स्थलों में पेरियानों धुन्डई व मुगल धुन्डई (उत्तर-पूर्वी ब्लूचिस्तान) में मृतकों का पहले अंतिम संस्कार होता था, फिर उनकी हड्डियों को इकट्ठा करके एक मटके में दफना दिया जाता था।

समापन विचार

उपरोक्त चर्चा से यह बात स्पष्ट है कि कुछ विशिष्ट पुरातात्विक घटकों ने प्रारंभिक हड़प्पा चरण का गठन किया था। ये निम्नलिखित हैं :

1) किलेबंदी वाली बस्तियाँ व मानकीकृत ईटों द्वारा निर्मित घरों की योजनाबद्ध व्यवस्था।

2) जालीदार (ग्रिड) संरचना व बस्तियों के दो किलेबंदी वाले क्षेत्रों में विभाजित होने के प्रमाण मिलते हैं।

3) मृदभांड़ों के आकार ओर डिजायनों में आंशिक रूप से मानकीकरण जिनमें से कुछ परिपक्व हड़प्पा तक भी मिलते हैं। ये सभी संबंधित पुरातात्विक स्थलों पर विभिन्न अनुपातों में मिलते हैं।

4) विविध कलाकृतियाँ जैसे पक्की मिट्टी की टिकिया व चित्रित रूपांकन जैसे मछली के शल्क, पीपल के पत्ते आदि जो कि परिपक्व हड़प्पा चरण तक जारी रहते हैं।

5) कुछ स्थानों पर परिपक्व हड़प्पा लिपि के अनेक संकेताक्षरों का होना।

6) कुछ स्थलों में ज्यामितीय रूपांकनों के साथ बटन वाली मुहरों की उपस्थिति भी पायी गयी है।

7) सम्पूर्ण सिंधु व हाकड़ा मैदानों में हल के आधार पर कृषि के सम्पूर्ण जीवन का समकेन व विस्तार। यह बुनियादी फसलों के प्रकारों के साथ रहा जिनका बोना परिपक्व हड़प्पा काल में भी जारी रहा।

8) कच्चे माल का व्यापक परिवहन व विनिमय ।

9) अनुष्ठानिक मान्यताएं पकी मिट्टी की मवेशियों व स्त्री लघु-मूर्तियों की एक विस्तृत श्रृंखला में सन्निहित है।

10) एक विविधतापूर्ण और सुस्थापित धातु कर्म परंपरा, जो उत्तरोत्तर काल में भी निर्बाध बनी रही।

11) इस स्तर पर सिंधु के बाटों की उपस्थिति।

12) अंत में परिपक्व हड़प्पा के उपर इस चरण के अपरिवर्तनशील स्तरीकरण की प्रधानता।

इन सभी विशेषताओं के विषय में निष्कर्ष से यह सिद्ध होता है कि प्रारंभिक हड़प्पा सभ्यता का स्तर हड़प्पा सभ्यता का प्रथम चरण है। डी. के. चक्रबर्ती (1999) का मत है कि एक समान संस्कृति, पूरे सिंधु-हाकड़ा के मैदानों में फैल गयी और इसने स्वयं को स्थानीय संदर्भ के अनुकूल बनाया।

संक्रमणकालीन चरण (2600 बी.सी.ई.)

जैसा कि पूर्व भाग में उल्लेखित है, हम सिंधु घाटी सभ्यता को तीन मूलभूत स्तरों में विभाजित कर सकते हैं जो इस प्रकार हैं : प्रारम्भिक, परिपक्व व उत्तर हड़प्पा काल। हालाँकि कुछ स्थलों पर प्रारम्भिक हड़प्पा से परिपक्व हड़प्पा तक सक्रंमण के प्रमाण उपलब्ध हैं। परिपक्व हड़प्पा के रूप में आने में एक आकस्मिता दिखाई पड़ती है, विशेषत : लेखन, कला रूपों की बहुलता व वस्तुओं के सामान्य पैमानों में उपलब्धि। एक सभ्यता गुणात्मक परिवर्तनों से गुज़रती है, फिर भी उसकी सटीक अवधि व रूपातंरण की प्रक्रिया का समुचित आकलन अध्ययन का विषय बना हुआ है। तीन स्थलों हड़प्पा, कुनाल व धौलावीरा से यह स्पष्ट है कि वास्तव में रूपांतरण का क्रम सिंधु घाटी सभ्यता के उद्भव के संदर्भ में हो रहा था।

हड़प्पा में, प्रारम्भिक हड़प्पा चरण के ऊपरी स्तर में परिपक्व चरण की ओर संक्रमण निवास क्षेत्रों के निर्माण में उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम सड़कों की जालीदार संरचना द्वारा भी दर्शाया गया है। **कुनाल** में समयावधि I C, दर्शाती है कि क्लासिकल हड़प्पा अनुपात 1:2:4 में मिट्टी की ईंटों का प्रयोग हुआ है, सड़कों में सोख्ता गर्त (soakage pits) पर आधारित सुनियोजित जल-निकासी व्यवस्था मौजूद थी। चौकोर अपितु अलिखित घुंडी वाली शैलखटी व शंख की मुहरे; विशिष्ट हड़प्पा की तांबे के तीर शीर्ष; कई अर्द्ध कीमती पत्थर के मनके, सोने व चांदी के गहने जिनमें चांदी के मुकुट शामिल हैं, बाजूबंद व चक्र के आकार के मनके भी सिंधु घाटी सभ्यता से जुड़े हुए हैं। **धौलावीरा** में भी समयावधि IV उत्कृष्ट सिंधु घाटी सभ्यता को दर्शाती है। हालाँकि III-B चरण तक हड़प्पा तत्वों जैसे कि मुहरें, लिपि, विभिन्न प्रकार के मृदभांड़ों के साथ-साथ सजावटी रूपाकंनों द्वारा बस्ती का मूल खाका तैयार कर लिया गया था।

इस संक्रमण की व्याख्या कैसे की जा सकती है? इसका कारण, शिल्प विशेषज्ञता में बढ़ता हुआ स्तर ही है। मृदभांडों को बनाने का कार्य वाणिज्यिक स्तर पर होता था, चूड़ियों की उपस्थिति जो ''टर्बीनैला पाईरम'' (एक प्रकार का शंख) से बनी हुई थी, चकमक से बने हुए ब्लेड़ जिनका स्रोत सिंधु के ऊपरी हिस्से में स्थित सुक्कुर रोहरी पहाड़ियां थी, ये सब हड़प्पा के प्रसंगोचित संदर्भ में मौजूद हैं। अरावली के साथ-साथ ताम्र धातु कर्म भी विकसित हुआ (इस परंपरा का जो कि उत्तरी पूर्वी राजस्थान, व इसका विस्तार हरियाणा के नारनौल क्षेत्र व हरियाणा में तोशाम की टिन धारक पहाड़ियाँ हैं)। दूसरा कारक है संगठित सिंचाई प्रणाली का उद्भव। सिंधु-हकड़ा के मैदानों में बस्तियों की संख्या काफ़ी बढ़ गयी, यह केवल सिंचाई तंत्र के विस्तार से ही सम्भव हो सकता था। शिल्प कला में विशेषज्ञता तथा सामाजिक संस्थागत परिवर्तन परिपक्व चरण का सूचक है चाहे इनमें कितनी ही अनिश्चितता हों। उदाहरण के लिए, 'कुनाल' से प्राप्त सोना चांदी के आभूषण एक आभिजात्य वर्ग के उभरने के बारे में संकेत करते हैं। धौलावीरा में शहरी क्षेत्रों में कई विभाजन, इस संभावना की ओर संकेत करते हैः कि जल व्यवस्था, सिंचाई व्यवस्था एक सामाजिक रूप से नियंत्रित व्यवस्था थी। इसी आधार पर एक नियंत्रक व शासन के केन्द्र का उदय होता स्पष्ट है।

(**स्रोत** - डी.के. चक्रबर्ती, 1999.)

बोध प्रश्न 2

1) किसी एक प्रारम्भिक हड़प्पा संस्कृति पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

2) संक्रमण काल के कुछ विशेषताओं पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

3) सिंधु सभ्यता के उद्‌भव पर वाद-विवाद की चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

5.7 सारांश

इस इकाई में, हमने चार समकालीन पुरातात्विक संस्कृतियों का अध्ययन किया जिसने प्रारम्भिक हड़प्पा चरण का गठन किया। इन संस्कृतियों से कुछ महत्वपूर्ण विकास हुये जो कि परिपक्व हड़प्पा चरण के लिए भावी संकेत सिद्ध हुये। परिपक्व चरण की तरह, यहाँ भी हमारे पास किलेबंद शहरों, एक विस्तृत कृषि आधार, शिल्प उत्पादन व व्यापार में वृद्धि के उदाहरण हैं। इन संस्कृतियों में कमी परिपक्व अवस्था में दिखाई देने वाली एकरूपता की है। साथ ही यहाँ लेखन का प्रयोग नहीं है। इन संस्कृतियों की उपस्थिति निश्चित रूप से यह सिद्ध करती है कि इस सभ्यता का उद्‌भव देशी था, हालांकि वास्तविक कारण जो इस सभ्यता को परिपक्व अवस्था में पहुंचाने का कारक बने अभी भी ज्ञात नहीं है। इन बिंदुओं को संदर्भ में रखते हुए हमारा ध्यान परिपक्व हड़प्पा चरण की तरफ़ जाता है, जिस पर विचार अगली इकाई में किया जायेगा।

5.8 शब्दावली

पुरावशेष : मानव की अतीत में हस्तनिर्मित चीज

कालक्रम : समय की गणना की विधि

दुर्ग : शहर का किला

प्रसार : इस सिद्धांत का तर्क है किसी भी नई तकनीक या विचार की उत्पत्ति एक जगह होगी जहाँ से यह शेष दुनिया में फैलेगी।

उत्खन्न : एक प्राचीन स्थल की खुदाई

मृदभांड तंतु : मृदभांड बनाने की मिट्टी

अन्नभंडार : अनाज के लिए भंडारगृह

रूपाकंन : मृदभांड पर सजावट

खानाबदोशी : पशु चरवाहों से जुड़े समुदायों के जीवन का तरीका। लोग एक जगह पर नहीं रहते हैं लेकिन एक जगह से दूसरी जगह भ्रमण करते रहते हैं।

चरागाही खानाबदोशी : मवेशियों और भेड़-बकरी चरवाहों से जुड़ा एक सामाजिक संगठन जो चारागाहों की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान तक भ्रमण करते हैं।

ग्रिड प्रणाली : जालीदार संरचना

टेराकोटा : मिट्टी व बालू का मिश्रण जो कि मूर्तियों व खिलौने बनाने में प्रयोग होता है। यह आग में पकी लाल-भूरे रंग का होता है।

रेडियो कार्बन डेटिंग : इसे C-14 डेटिंग भी कहा जाता है। यह एक मृत कार्बनिक नमूने में रेडियो-सक्रिय आइसोटोप-14 को मापने की एक विधि है जो एक ज्ञात और गणना योग्य दर से गायब हो जाती है।

5.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) i ✓ ii × iii ✓ iv ×

2) भाग 5.3 देखें।

बोध प्रश्न 2

1) उपभाग 5.6.1 को देखें।

2) अंत में दिये गये पाठ-पेटिका को देखें।

3) भाग 5.5 देखें।

5.10 संदर्भ ग्रंथ

ऑलचिन, बी. एंड ऑलचिन, एफ. आर. (1982). *द राईज़ ऑफ सिविलाईजेशन इन इंडिया एंड पाकिस्तान.* केम्ब्रिजः केम्ब्रिज युनिवर्सिटी प्रैस.

चक्रबर्ती, डी. के. (1999). *इंडियाः एन आर्क्योलोजिकल हिस्ट्री.* ऑक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी प्रैस.

चाईल्ड, वी. (1950), द अर्बन रवूल्यूशन. *द टाऊन प्लैनिंग रिव्यू,* 21 (1), 3-17.

घोष, ए. (1965). द इंडस सिविलाईजेशनः इट्स ओरिज़ंस, ऑथर्स, एक्सटेंट एंड क्रोनोलोजी. *इंडियन प्रिहिस्ट्री.* पूना, 113-156.

मार्शल, जॉन (1931). *मोहनजोदड़ो एंड द इंडस सिविलाईज़ेशन.* वॉल्यूम 10 लंडनः आर्थर प्रोब्सथैन.

मैकिनटोश, जेन (2008). *द ऐशियंट इंडस वैलीः न्यू पर्सपैक्टिव्स.* एबीसी-क्लियो.

पोशैल, जी. (2003). *द इंडस सिविलाईज़ेशनः ए कंटैमप्रैरी पर्सपैक्तिव.* न्यूयॉर्कः अल्टामीरा प्रैस.

राईट, रीटा पी. (2010). *द एंशियंट इंडसः* क्रैम्ब्रिज युनीवर्सिटी प्रैस.

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY